इन्दिरागान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र

पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी

कलाकोश प्रभाग के रजत जयन्ती समारोह

२१–२३ जुलाई, २०१३

विगत २१ जुलाई २०१३ गुरुपूर्णिमा के पूर्व संध्या पर इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी के द्वारा कलाकोश प्रभाग के रजत जयन्तो समारोह के अवसर पर त्रिदिवसीय समारोह का आयोजन हुआ जिसका विवरण निम्नवत् है–

प्रथम दिन २१ जुलाई को कार्यक्रम का उद्घाटन प्रो० पृथ्वीश नाग, कुलपति महात्मागान्धी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होने कहा कि गुरु परम्परा का सातत्य बनाये रखने में काशी का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान है। काशी का सम्बन्ध भगवान् व्यास के अतिरिक्त जैन एवं बौद्ध परम्पराओं से भी है। उन्होंने गुरु कुल परम्परा एवं आधुनिक शिक्षण परम्परा के समन्वय पर भी जोर दिया एवं कहा कि इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र संस्कृति के क्षेत्र में यह कार्य पहले से ही कर रहा है। कार्यक्रम का आरम्भ डॉ० नरेन्द्रदत्त तिवारी के वैदिक मंगलाचरण से हुआ। संस्था के परामर्शदाता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी स्वागत भाषण देते हुए इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पाँचों प्रभाग – कलाकोश, जनपदसम्पदा, कलानिधि, कलादर्शन एवं सूत्रधार के गतिविधियों का परिचय दिया। डॉ० प्रणति घोषाल ने इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी के विगत २५ वर्ष के कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

मुख्य कलाकार एवं मानसिंह तोमर संगीत विश्वविद्यालय ग्वालियर के पूर्व कुलपति प्रो० चितरञ्जन ज्योतिषी ने कहा कि गुरु परम्परा संस्कृत एवं संगीत के क्षेत्र में आज भी जीवन्त है। इसके पश्चात् उन्होंने वर्षा ऋतु के तीनों माह आषढ़, सावन एवं भाद्रपद के लिए मल्हार राग के अलग–अलग रूप की प्रस्तुति दी। आषाढ़ मास के लिए बिलम्बित एक ताल में निबद्ध बंदिश '' **गरजत आए बादर काले** '' पर सुर मल्हार की अवतारणा की। इसी राग में द्रुत तोन ताल में '' **बदरवा बरसर आये रे**.....।'' को सुना कर आषाढ़ मास के वर्षा के भाव से अवगत कराया। इसके बाद गौड़ मल्हार में ''**झुकी आयी रे बदयिा सावन की**'' और ''**रूम झुम बरसे बदरवा रे**'' की प्रस्तुति पर श्राता गण झुम उठे। भाद्र मास के लिए मियाँ के मल्हार एवं मेघ मल्हार में ''**उमड़–घुमड़ घन बरसेबदरा**'' को सुनाया। अन्त में दो भजनों को सुनाकर उन्होंने अपने कार्यक्रम को सम्पन्न किया।

प्रथम दिन के कार्यक्रम की समाप्ति प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी, परामर्शदाता, इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी के धन्यवाद ज्ञापन से हुई। समारोह में बड़ी संख्या में कलाप्रेमी श्रेता उपस्थित थे, उनमें प्रो० युगल किशोर मिश्र, प्रो० नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी, प्रो० कृष्णकान्त शर्मा, प्रो० उपेन्द्र पाण्डेय, प्रो० कमल गिरि, डॉ० सुकुमार चट्टोपाध्याय, डॉ विश्वनाथ पाण्डेय, डॉ स्वरवन्दना शर्मा आदि की उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

आयोजन के दूसरे दिन के कार्यक्रम का प्रारम्भ डॉ० रजनीकान्त त्रिपाठी के मङ्गलाचरण से हुआ। इस अवसर पर मुख्य वक्ता सुप्रसिद्ध दार्शनिक प्रो० प्रद्योत कुमार मुखोपाध्याय, पूर्व अध्यक्ष, दर्शन विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, थे। उन्होंने 'गुरुतत्त्व' विषय पर एक सारगर्भित व्याख्यान दिया। उन्होंने व्याख्यान का आरम्भ करते हुए कहा कि गुरुतत्त्व से भिन्न एक तत्त्व है 'गुरुवाद'। जिसपर चर्चा होनी चाहिए। उन्होंने

गुरुवादी समर्थक एवं गुरुवाद के विरोधियों के मत के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। आधुनिक काल में गुरु की मान्यता पर प्रश्नचिह्न है। गुरु के अस्तित्व एवं दीक्षा को लेकर भी वितर्क उठा और इसका सही जबाब गुरुवादियों के तरफ से हुआ नहीं। गुरुवादी एवं गुरुवादी विरोधी, इन दोनों के बीच में विवाद है। गुरुपूणिमा गुरु अर्चना का दिन है। गुरु को प्रसन्न करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करना यही हमारा लक्ष्य है। गुरु के प्रसन्नता को कोई उत्पन्न नहीं कर सकता है। गुरु पर हमारी श्रद्धा दृढ़ नहीं है। उसको सशक्त एवं दृढ करने के लिए गुरु पूजन अत्यन्त उपकारी है। गुरु के प्रसाद से गुरु भक्ति उत्पन्न हो जाएगी। जो लोग गुरुवादियों का विरोध करते हैं उनमें भक्ति नहीं है। गुरुवादी एवं उनके विरोधी में हम थोड़ा शास्त्र निष्ठा कम देखते हैं। इस प्रकार अनेकविध तर्कों से प्रो० मुखोपाध्याय ने दीक्षा के विविध प्रभेद एवं उनके तात्पर्य के बारे में विस्तार से चर्चा की। वैदिक एवं तान्त्रिक परम्परा में गुरु की अवधारणा, ईश्वर एवं गुरु तत्त्व में ऐक्य या अनैक्य एवं गुरु एवं शास्त्र के मध्य सम्बन्ध पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। इस सत्र की अध्यक्षता इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी के परामर्शदाता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने की। उन्होंने कहा कि पर तत्त्व गुरु एवं शिष्य ये तीनों अभिन्न हैं। हमारी बुद्धि आश्रान्त होकर उर्ध्वारोहण करती है। जो हमारी धी है वह अर्थतत्त्व को देखती है। जो दिखाता है वह गुरु है। इसी प्रक्रिया को बताते हुए कहते हैं कि जो इच्छा करते हैं वो जानते हैं, जो जानते हैं वही करते हैं। अन्त में उन्होने कहा कि समस्त परम्परा के आरम्भ कर्ता ईश्वर हैं वे ही आदि गुरु हैं। इसी प्रकार अखण्ड पर चेतना ही लोक कल्याण के लिए अपने को गुरु एवं शिष्य के रूप में विभक्त करती है और तन्त्र का उपदेश करती है। दोनों ही दृष्टियों से पर चेतना एवं पर तत्त्व ही गुरुतत्त्व है। इसलिए भारतीय संस्कृति में गुरु का विशेष महत्त्व है।

इस सत्र का संचालन डॉ० प्रणति घोषाल ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ० नरेन्द्रदत्त तिवारी ने किया। सभा में अनेक विद्वान श्रोता उपस्थित थे जिनमें प्रो० मञ्जुला चतुर्वेदी, प्रो० कृष्णकान्त शर्मा, प्रो० उपेन्द्र पाण्डेय, डॉ० संजय कुमार, डॉ० सुकुमार चट्टोपाध्याय, डॉ उर्मिला शर्मा आदि प्रमुख थे।

तीसरे दिन के कार्यक्रम का आरम्भ डॉ० त्रिलोचन प्रधान के मङ्गलाचरण से हुआ। 'ज्ञान प्रवाह' के सभागार में 'Some Dimensions of Understanding Ancient Indian Sculptures' विषय पर प्रो० मारुति नन्दन प्रसाद तिवारी ने अपने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान में कहा कि कोई भी मूर्ति कैसे आजतक प्रासङ्गिक है। गुप्त काल के मूर्तियों का भाव हम आज भी चिन्तन कर सकते हैं। निर्जीव रूप में भी हम कैसे उनकी बातों को समझ लेते हैं। प्राचीन भारतीय मूर्तियाँ मूर्त से अमूर्त, व्यक्त से अव्यक्त और गोचर प्रत्यक्ष से अगोचर साक्षात्कार की यात्रा कराती है। इस कला के आस्वाद के लिए उनके प्रतिमाविज्ञानीय, प्रतीकशास्त्रीय, शिलाशास्त्रीय समस्त आयामों के समझते हुए समन्वित दृष्टि से उनका अवलोकन करना चाहिए। मूर्तियों में एक स्थिर क्षण के अंकन के द्वारा एक सम्पूर्ण काल को अभिव्यक्ति दी गयी है। इस प्रकार लगभग ५० उदाहरणों के द्वारा उन्होंने उपने बातों से अवगत कराया। सभी कलाकृतियाँ (स्थापत्य एवं मूर्तिकला) प्रकृति से दृढ सम्बद्ध है, यह निकट सम्बन्ध से ही कलाकृतियाँ प्राणवन्त हो उठती हैं इसको विना समझे कलाकृतियों के अध्ययन या रसास्वादन असम्भव है। अन्त में राम सीता एवं हनुमान के एक मूर्ति में स्पर्श का महत्व बताते हुए कहते हैं कि भक्ति की लघुता ही उसकी श्रेष्ठता की पहली सीढ़ी होती है। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रो० नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी ने कहा कि कलाकृति के साथ रसिक को संवाद स्थापित करना चाहिए। विग्रह से जुड़े समस्त आख्यानों को समझते हुए उसका अवलोकन करना चाहिए, तब मूर्ति स्वयं दर्शक के सामने अपना रहस्य खोल देती है। उन्होने इसके लिए पार्वती के तपस्या के

अंकन के उदाहरण को स्पष्ट किया और बताया कि मध्य आकाश में सूर्य एवं तपस्यारत पार्वती के चारों ओर अग्नि के अंकन के द्वारा इस आख्यान को स्पष्ट रूप से अंकित कर दिया गया है।

सभा का संचालन डॉ० प्रणति घोषाल ने किया। ज्ञान प्रवाह की निदेशिका प्रो० कमल गिरि ने अतिथियों का स्वागत किया। अन्त में धन्यवाद ज्ञापन इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी के परामर्शदाता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने किया। सभा में प्रो० युगल किशोर मिश्र, प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय, डॉ० मञ्जुला सिंह, डॉ० भानु अग्रवाल, डॉ० हीरा लाल प्रजापति, डॉ० एस० एस० सिन्हा आदि अनेक गण मान्य लोग उपसिति थे।

रजनीकान्त त्रिपाठी